12. वाच्य

वाच्य का शाब्दिक अर्थ है बोलने योग्य या बोलने का विषय। क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वह वाक्य में किसके यानी कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार प्रयुक्त हुई है, वह वाच्य कहलाता है। यह क्रिया का विकारी तत्व है।

शिक्षण-संकेत

- ❖ छात्र वाच्य पिछली कक्षा में पढ़ चुके हैं। उनसे वाच्य का अर्थ पूछें।
- ❖ पृष्ठ 71 पर दिए वाक्यों को पढ़ें तथा उनका वचन समझाएँ।
- ❖ समझाएँ, वाच्य क्रिया में कर्ता, कर्म तथा भाव की प्रधानता या क्रिया का विधान बताता है।
- ❖ वाच्य की परिभाषा याद करवाएँ। समझाएँ, क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वह वाक्य में किसके द्वारा प्रयुक्त की गई है, उसे वाच्य कहते हैं।
- ❖ वाच्य के तीनों भेदों– कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य से अवगत कराएँ।
- ❖ पृष्ठ 71-72 पर दिए भेदों को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट रूप में समझाएँ। वाच्य में विशेष ध्यान देने वाले बिंदुओं को भी स्पष्ट करें।
- ❖ बीच-बीच में भिन्न-भिन्न उदाहरणों द्वारा जाँचें कि छात्र वाच्य कितना सही समझ पाए हैं।
- ❖ छात्रों को वाच्य परिवर्तन करना सिखाएँ। पृष्ठ 73-74 पर दिए वाच्य परिवर्तन के वाक्य पढ़वाएँ तथा समझाएँ।
- ❖ मौखिक प्रश्नों के उत्तर छात्रों से पूछें।